आशा न छोड़ें!

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2024

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं।

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons । **पुस्तकें:** apcwo.org/books । **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org । **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org । **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi – Don't Lose Hope!)

आशा

न छोड़ें!

विषयसूची

1.	जीवन हमेशा आसान नहीं होता	1
2.	आशा—हमारे मसीही जीवन का एक अनिवार्य भाग	3
3.	आशा का महत्व	5
4.	वह परमेश्वर जो निराशाजनक परिस्थितियों को पलट देता है	7
5.	निराशाजनक परिस्थिति में आशा रखने का आधार	11
6.	निराशाजनक परिस्थिति के मध्य मैं क्या करता हूँ?	16

1

जीवन हमेशा आसान नहीं होता

हम सभी जीवन के सफ़र की शुरूआत अनेक सपनों, लक्ष्यों, महत्वाकांक्षाओं और आकांक्षाओं के साथ करते हैं। बड़े उत्साह के साथ, हम योजनाएँ बनाते हैं कि हम क्या करना चाहते हैं, हम कहाँ जाना चाहते हैं और हम जीवन में क्या बनना चाहते हैं। किन्तु साथ ही सफ़र के दौरान, यह निश्चित है कि हमें कुछ तूफानी मौसम का सामना करना पड़ेगा। जीवन हमेशा सरल नहीं होता। हम अक्सर चाहते हैं कि जीवन कहानी की किताब के समान सरल हो, किन्तु हमेशा ऐसा नहीं होता! अपनेक्षित अप्रत्याशित, मुश्किलें और परिस्थितियाँ रास्ते में आती हैं। ऐसे ही समयों में हमारे लक्ष्य और सपने फिसलते प्रतीत होते हैं। कभी-कभी हम अपने आप को ऐसी परिस्थितियों के मध्य में पाते हैं जो लगभग निराशाजनक प्रतीत होती हैं। हम आशा खोते हैं। हम हताश होकर हार मानने लगते हैं। हम सोचने लगते हैं, "मैं वह कभी पूरा नहीं कर पाऊँगा" या "मैं कभी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाऊँगा।" हम अपने आप को लक्ष्यों तक पहुँचने में असहाय समझकर निराश हो जाते हैं।

कभी कभी हमारा जीवन अप्रत्याशित मोड़ ले लेता है, और ऐसी परिस्थितियाँ सामने आती हैं जिनके लिए हम पूर्णतः तैयार नहीं होते, हम अपने आपको रास्ते के अंत में पाते हैं जहाँ से पलटने का कोई रास्ता दिखाई नहीं। हो सकता है, आप में से कुछ लोग असहाय परिस्थितियों के मध्य हों एवं यह पुस्तक पढ़ रहे हों। यह आपकी नौकरी, करियर, शिक्षा, घर, विवाह, या परिवार, कुछ भी हो सकता है। जीवन में कई बातें गलत हो सकती है। कभी कभी, जीवन अप्रत्याशित मोड़ ले लेता है, और जिन परिस्थितियों के लिए हम बिल्कुल तैयार नहीं थे, वे हमारे सामने आती हैं। हम अपने आपको रास्ते के अंत में पाते हैं जहाँ से पलटने का कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। हो सकता है, आप में से कुछ लोग असहाय परिस्थिति में हों एवं यह पुस्तक पढ़ रहे हों। यह आपकी नौकरी, करियर, शिक्षा, घर, विवाह, या परिवार कुछ भी हो सकता है। जीवन में कई बातें गलत हो सकती हैं। परंतु मैं आपको प्रोत्साहन देना चाहता हूँ कि बाइबल का परमेश्वर मृतकों को जीवन देने में विशेषता रखता है—उन स्थितियों और परिस्थितियों को जो मृत और निराशाजनक प्रतीत होती हैं। वह निराशाजनक परिस्थितियों को बदलने में महारत रखता है। आमेन! जब वह आपके पक्ष में है, तो आप आशा न रहते हुए भी आशा रख सकते हैं। जब कुछ कुछ निराशाजनक प्रतीत होता है, तब आप जयवंत होकर बाहर निकल सकते हैं। यह पुस्तक प्रोत्साहन के सरल शब्दों को ले आती है और हमें प्रोत्साहन देती है कि हम आशा न छोड़ें।

आशा रखने का महत्व

आशा रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। "आशा" से, हमारा मतलब है प्रत्याशा, अपेक्षा, ऐसा कुछ जिसका हम इंतज़ार करे हैं, इच्छा, स्वप्न या आकांक्षा। मसीही जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है आशा। बाइबल तीन बातों का उल्लेख करती है जो हमारे मसीही चालचलन में महत्वपूर्ण हैं; उनमें से एक है आशा।

कुरिन्थियों की पहली पत्री 13:13
पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, पर इन में सबसे बड़ा प्रेम है।

2

आशा—हमारे मसीही जीवन का एक अनिवार्य भाग

विश्वासियों के रूप में, हम कई बातों की आशा करते हैं जो अभी आने वाली हैं।

अनंत जीवन की आशा

तीतुस की पत्री 1:2

उस अनन्त जीवन की आशा पर जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने, जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की है।

हम अनंत जीवन की आशा रखते हैं। जबकि अनंत जीवन वह है जो हमारी आत्मा में है, और वह भी जिसकी हम प्रतीक्षा करते हैं।

महिमा की आशा

कुलुस्सियों की पत्री 1:27

जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।

हममें मसीह हमारी महिमा की आशा है। वह आने वाले विश्व में जीवन के लिए हमारी आशा है, एक ऐसा विश्व जो वर्तमान में हैं उससे कहीं श्रेष्ठ है। हम स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में उसके साथ अपने समय का इंतज़ार कर रहे हैं।

उद्धार की आशा

1 थिस्सलुनीकियों 5:8

पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें।

1 पतरस 1:7-9

[7] और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से तपाए हुए नाशवान् सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे।

[8] उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन

होते हो जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है;
[9] और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो।

जबकि उद्धार की शुरूआत होती है, वहाँ हमारे उद्धार का भाग वह भी है जिसका हम इंतज़ार करते हैं।

मसीह की वापसी की आशा

तीतुस 2:13
और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने की बाट जोहते रहें।

पुनरूत्थान की आशा

प्रेरितों के काम 24:15
और परमेश्वर से आशा रखता हूँ जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा।

3

आशा का महत्व

हमारे प्रतिदिन के जीवन में आशा रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें निराशा के मध्य भी आशा से परिपूर्ण व्यक्ति बनना है। निरंतर आशा बनाए रखना क्यों महत्वपूर्ण है इसके कई कारण हैं।

जब आशा विलंबित होने पर, व्यक्ति का हृदय शक्तिहीन हो जाता है

नीतिवचन 13:12

जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है, तो मन शिथिल होता है, परन्तु जब लालसा पूरी होती है, तब जीवन का वृक्ष लगता है।

हम एक विशेष कार्य के एक निश्चित वर्ष में पूर्ण होने की अपेक्षा रखते है किन्तु शायद वर्ष के अन्त तक भी वह नहीं हो पाता। हम स्वयं से कहते हैं कि वह शायद अगले तक वर्ष पूर्ण हो किन्तु फिर भी ऐसा नहीं होता। जैसे ही आशा की हुई बात में विलम्ब होता है, हमारा अन्तर्मन पूर्णतः आशा खो बैठता है और हम पूर्णतः निर्बल हो जाते हैं। दूसरी ओर, जब हमारी आशा का विषय आता है, यह जीवनदायी वृक्ष के समान होता है। वह हमें स्फूर्ति और ताज़गी देता है। हमें ताज़गी और नवीनीकरण का अनुभव होता है। हमारे विश्वास में वृद्धि होती। हम प्रेरित होते हैं और आगे बढ़ते हैं।

आशा प्राण का एक सहारा(लंगर) है

इब्रानियों 6:19अ

वह आशा हमारे प्राण के लिये ऐसा लंगर है, ...

आशा हमारे प्राण के लिए एक लंगर है। "प्राण" शब्द मन, इच्छा और भावनाओं को दर्शाता है। प्राण के सम्बंध में आशा की भूमिका को समझाने के लिए यहाँ जहाज में लंगर डालने का उदाहरण दिया गया है। जब समुद्र में लंगर डाला जाता है, तब वह तूफान के मध्य में स्थिरता ले आता है। बाइबल कहती है कि आशा हमारे *प्राण के लिए एक लंगर है।* इसका अर्थ यह है कि यदि मेरे पास आशा नहीं है, तो मेरी आत्मा—मेरी इच्छा, भावनाएं और बुद्धि—में अशांति के समय में आवश्यक स्थिरता या शक्ति नहीं होगी। जब लोग पूर्णतः आशा खो बैठते हैं, तब जीवन के तूफान प्रबल प्रतीत होकर हमें आगे बढ़ने नहीं देते हैं। वे

निराश होकर सरलता से हार मान लेते हैं।वे सोचने लगते हैं कि क्या जीने का कोई कारण है। "कोई मेरी परवाह नहीं करता," "सब कुछ गलत है" और "वह कभी ठीक नहीं हो सकता" ये सारे निराशाजनक विचार, हमारे हृदय में उफनने लगते हैं। इस अवस्था में, कई लोग आत्महत्या करने का भी विचार करते हैं। अतः कठिन परिस्थियों में भी आशा न खोना महत्वपूर्ण है। आशा हमारे प्राण का लंगर है।

आशा विश्वास से अग्रगामी है

इब्रानियों 11:1

अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।

आशा महत्वपूर्ण है क्योंकि विश्वास आशा पर निर्भर होता है। आशा विश्वास से पहले आती है। विश्वास केवल तभी रख सकते हैं,जब हममें आशा होती है। उस व्यक्ति के बारे में सोचें जिसे जानलेवा बीमारी है और डॉक्टरों ने कहा है कि उसकी सहायता के लिए चिकित्सा विज्ञान कुछ नहीं कर सकता और उसके जीने के लिए केवल कुछ ही दिन बचे हैं। संभवतः अधिकांश लोग ऐसी परिस्थिति में सारी आशा छोड़ देते हैं। उसके अंतिम क्षणों के चित्र, उसके अंतिम शब्द, और उसका अंतिम संस्कार का विचार उसके मन को भर देता है। जब व्यक्ति आशा त्याग देता है, तब विश्वास भी कार्य नहीं कर सकता क्योंकि *"विश्वास आशा की हुई बातों की वास्तविकता है।"* जब व्यक्ति स्वस्थ होने की आशा ही नहीं करता, तब परमेश्वर की ओर से स्वस्थता(चँगाई) प्राप्ति का विश्वास होना अत्यधिक कठिन होता है। आशा परमेश्वर में विश्वास रखने हेतु एक आवश्यक शर्त है। बीमार व्यक्ति को कम से कम अपने स्वस्थ होने एवं अपनी मृत्युशैय्या से उठकर चलने की कल्पना करने का प्रयास करना चाहिए। जबकि डॉक्टरों ने भी आशा त्याग दी हो, किन्तु उसे यह आशा रखना चाहिए कि स्वर्ग का परमेश्वर उसे स्वस्थ कर सकता है। इससे भी बढ़कर, वह ऐसा करना चाहता है। पूर्णतः स्वास्थ लाभ की आशा होने का विश्वास ही, चंगाई लाने की उसकी भूमिका को निभा सकेगा।

4

वह परमेश्वर जो निराशाजनक परिस्थितियों को पलट देता है

हमें यह समझना आवश्यक है कि, हम चाहे जिस स्थिति में भी हों,चाहे कितनी भी निराशाजनक हों, परमेश्वर निराशाजनक स्थितियों को बदलने की विशेषता रखता है। आमेन! शायद आपकी निराशाजनक परिस्थिति आपका विवाह, नौकरी, बच्चे, पैसा करियर, शिक्षा या कुछ और हो, चाहे जो भी हो इस वास्तविकता पर अपना ध्यान केंद्रित करें कि हम ऐसे परमेश्वर की सेवा करते हैं जो निराशाजनक परिस्थियियों को बदल देता है। अतः हमें आशा नहीं छोड़नी चाहिए। आइए हम बाइबल के कुछ परिचित उदाहरणों को देखते हैं जहां परमेश्वर ने निराशाजनक परिस्थितियों को बदल दिया था।

निर्धन स्त्री

उस स्त्री के बारे में विचार करें जिसका पति उस पर दो बेटों और भारी कर्ज़ को छोड़कर मर गया (2 राजा 4:1-7)। लेनदार आकर दोनों बच्चों को उठाकर ले जाने की धमकी देकर पैसा माँगने लगे इस स्त्री की परिस्थिति बिल्कुल निराशाजनक थी! वह परमेश्वर के दास एलिशा के पास गई, और उसने सामने अपनी स्थिति का वर्णन कर सहायता माँगी। उसने पूछा कि उसके पास घर में क्या है। उसने उत्तर दिया कि उसके पास सिर्फ एक तेल का बर्तन है। एलिशा ने उससे कहा कि वह जाकर जितने संभव`हो सकें उतने बर्तन इकट्ठा करे और उसके पास जो तेल है उसे प्रत्येक बर्तनों में उण्डेलती जाए। चमत्कारी रूप से, तेल बढ़ गया और सारे बर्तन तेल से भर गए। एलिशा ने फिर उससे कहा कि वह जाकर तेल बेचकर, अपना कर्ज़ चुका और नई शुरूआत कर। परमेश्वर ने आशारहित परिस्थिति को आश्चर्यजनक रूप से बदल दिया और इस स्त्री की आवश्यकताओं को पूर्ण किया।

विवाह भोज में चमत्कार

विवाह भोज में मेज़बान का दाखरस कम पड़ गया—एक सामान्य से अभाव की स्थिति, फिर भी निराश करने वाली परिस्थिति से कम नहीं। जब यह सोच रहे थे कि क्या करें, तब यीशु की माता मरियम ने विवाह भोज के सेवकों से कहा कि यीशु उनसे जो कुछ कहे वही वे करें। यीशु ने उन्हें मटकों को पानी से भरने के लिए कहा और उसे निकालकर मेहमानों को देने के लिए कहा। पानी

अलौकिक रूप से दाखरस में बदल गया और विवाह भोज के स्थान पर हर किसी ने भरपूरी से पिया (यूहन्ना 2:1-11)। चमत्कारी प्रावधान का दूसरा उदाहरण! परमेश्वर की सलाह को सुनकर वह जो कुछ कहता है उसे करना निराशाजनक परिस्थितियों को बदल सकता है।

निराशाजनक रात्री के बाद सुबह

लूका 5 में प्रभु यीशु द्वारा किए गए एक व्यापारिक चमत्कार का विवरण दिया गया जिसे हमारे लिए दर्ज़ किया गया है। पतरस अपने "व्यापार में साझेदारों"—याकूब, यूहन्ना, और अंद्रियास के साथ—मछली पकड़ने का व्यापार करता था। वे मछुआरे थे। एक बार, उन्होंने पूरी रात मछली पकड़ने में बिताई किन्तु कुछ भी नहीं पकड़ पाए। अगली सुबह, जब वे लौटे, तो प्रभु यीशु से उनकी भेंट हुई। उन्होंने उनसे उस भीड़ के प्रचार लिए उनकी नाव के उपयोग का अनुरोध किया जो उन्हें सुनने के लिए एकत्रित हुई है। वचन के प्रचार के बाद, प्रभु ने पतरस से कहा कि वह फिर से एक बार समुद्र में जाकर मछली पकड़ने के लिए अपना जाल डाले। पतरस ने उत्तर दिया, *"हे स्वामी, हम ने सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से जाल डालूँगा"* (लूका 5:5)। पतरस जानता था कि उसे उसके प्रयासों द्वारा कुछ प्राप्त नहीं हुआ। और फिर भी, वह वही करने के लिए तैयार था जो यीशु ने उससे करने के लिए कहा।

प्रभु के एक शब्द ने उस निराशाजनक स्थिति को बदल दिया। प्रभु ने जो कहा था उसके प्रति पतरस की अंतर्निहित आज्ञाकारिता उसके लिए एक "आर्थिक चमत्कार" बनकर आई।

इस्राएल राष्ट्र

यहूदी लोग सारे संसार में तितर-बितर होकर बिखर गए थे। यहूदी लोगों को निराशा की भावना ने जकड़ लिया था। यहेजकेल 37 में, परमेश्वर ने इस्राएली लोगों की अवस्था का वर्णन करने हेतु सूखी हड्डियों से भरी हुई एक घाटी दिखाई। *"हे मनुष्य के संतान, यह हड्डियाँ इस्राएल के सारे घराने की उपमा हैं। वे कहते हैं, हमारी हड्डियाँ सूख गईं; और हमारी आशा जाती रही; हम पूरी रीति से कट चुके हैं"* (यहेजकेल 37:11)।

फिर परमेश्वर ने यहेजकेल को निर्देश दिया कि वह सूखी हड्डियों पर भविष्यवाणी करे। *"इस कारण भविष्यवाणी करके उन से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है : हे मेरी प्रजा के लोगो, देखो, मैं तुम्हारी कब्रें खोलकर तुम को उन से निकालूँगा, और इस्राएल के देश में पहुँचा दूँगा"* (यहेजकेल 37:12)। भविष्यवक्ता के द्वारा परमेश्वर ने यहूदी लोगों के फिर इकट्ठा होने की और राष्ट्र के रूप में पुनः स्थापित करने की भविष्यवाणी की। परमेश्वर ने अपने वचन को पूरा किया, और मई 14, 1948 को, इस्राएल को राष्ट्र घोषित किया गया। सारे संसार से यहूदी लोग अपने देश वापस लौटने लगे।

अतः, जिसे हम निराशाजनक परिस्थिति कहते हैं उसे परमेश्वर बदल सकता है। परमेश्वर परिस्थितियों को बदलने के लिए "कब्रों" को खोलने के लिए और "सूखी हड्डियों" को जीवन देने का अभिलाषी और सक्षम है! परमेश्वर के लिए कुछ भी निराशजनक नहीं है।

अब्राहम और सारा

जब परमेश्वर ने अब्राहम और सारा को उनके स्वयं के बच्चे का वचन दिया। उस समय उनकी उम्र अधिक हो गई थी। उसने उन्हें एक पुत्र होने का वचन दिया और कहा कि इस पुत्र द्वारा, वह आकाश के तारों की संख्या और समुद्र की रेत के कणों के बराबर संतान प्राप्त करेंगे। जब संतान प्राप्ति की बात आई तब उनकी स्थिति निराशजनक हो गई थी क्योंकि इतने वर्षों में उन्हें कोई संतान नहीं हुई थी। अब्राहम 99 वर्ष का था और सारा की कोख बांझ थी—निराशाजनक परिस्थिति।

यहाँ बाइबल परिस्थिति के विषय यह कहती है।

रोमियों 4:17,18

[17] जैसा लिखा है, "मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है।" उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया, और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता है कि मानो वे हैं।

[18] उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश ऐसा होगा," वह बहुत सी जातियों का पिता हो।

अनुसरण करने हेतु यह एक महान उदाहरण है। अब्राहम ने *"निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया।"* जब आशा रखने का कोई कारण नहीं था, फिर भी अब्राहम ने आशा रख परमेश्वर के अनुसार कही बात पर विश्वास किया। और क्योंकि उसने आशा में विश्वास किया इसलिए, "जो भी कहा गया वह उसके अनुसार बना।"

जब परमेश्वर कोई वचन देता है, तो यह कभी न कहें, "प्रभु, यह वचन उपहासपूर्ण है।" वह उपहासपूर्ण नहीं हो सकता क्योंकि हमारा परमेश्वर वह परमेश्वर है जो मृतकों को जीवन देता है। अतः, जब परमेश्वर आपको वचन देता है तो परिस्थितियाँ कोई मायने नहीं रखती चाहे वह कितनी भी निराशजनक हों। केवल यह याद रखें कि परमेश्वर जो आपसे बोल रहा है, यह वही परमेश्वर है जो मृतकों को जीवन देता है—वह अस्तित्वहीन बातों को ऐसे बुलाता है जैसे कि वे हैं—और किसी भी प्रकार की परिस्थिति को बदलने की क्षमता रखता है। परमेश्वर न केवल परिस्थिति को अधिक अच्छी बनाने की सामर्थ रखता है, बल्कि उसे पूर्णतः पलट भी देता है! वह तुरंत उन वस्तुओं को अस्तित्व में ला सकता है, जो अस्तित्व भी नहीं है। हो सकता है कि इस समय घर में शांति का अस्तित्व नहीं है, परंतु परमेश्वर उसे अस्तित्व में ला सकता है। आपके शरीर मे स्वस्थता का अस्तित्व न हो, परंतु

परमेश्वर उसे अस्तित्व में ला सकता है। आपके घर, नौकरी, या करियर में सफलता का अस्तित्व न हो, परंतु परमेश्वर उसे अस्तित्व में ला सकता है।

5

निराशाजनक परिस्थिति में आशा रखने का आधार

निराशाजनक परिस्थिति में आशा रखने के आधार क्या है? क्या यह एक अनुमान मात्र है? क्या यह भौतिक परिस्थिति के लिए आपके हृदय का प्रश्न है? क्या यह सकारात्मक होने की बात है—सकारात्मक होने और सकारात्मक बने रहने के प्रयास का मानवतावादी दृष्टिकोण? अत्यंत मुश्किल परिस्थितियों में भी हम आशा क्यों रख सकते इसका साधारण सा कारण परमेश्वर और उसके वचन हैं।

रोमियों 4:18

उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश ऐसा होगा," वह बहुत सी जातियों का पिता हो।

अब्राहम ने विश्वास न करने का कारण होते हुए भी परमेश्वर ने जो वचन दिया था उस पर विश्वास किया। परिस्थिति निराशाजनक होने पर भी, उसने विश्वास किया। क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने कहा था! उसने "जो कहा गया उसके अनुसार" यह उसकी आशा का आधार था। परमेश्वर ने कहा था, और परिस्थिति निराशजनक होने पर भी परमेश्वर ने कहा था, फिर भी अब्राहम ने सारी आशा के विपरीत विश्वास का चुनाव किया।

परमेश्वर और उसके वचन हमारी आशा का आधार बनते हैं

भजन संहिता 38:15

परन्तु हे यहोवा, मैं ने तुझ ही पर अपनी आशा लगाई है; हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, तू ही उत्तर देगा।

भजन संहिता 130:5

मैं यहोवा की बाट जोहता हूँ, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूँ, और मेरी आशा उसके वचन पर है;

रोमियों 15:4

जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें।

परमेश्वर ही हमारी आशा का कारण, स्रोत और बल है। उसका वचन हमारी आशा का आधार बन जाता है। पवित्र शास्त्र के वचनों के द्वारा हमारे हृदय में धैर्य है और आश्वासन उत्पन्न होता है हम आशा बनाए रख सकते हैं।

भविष्य के लिए आशा

अब तक हमने जो कुछ भी पढ़ा है उन सारी बातों का व्यावहारिक पक्ष देखें। आपमें से कुछ लोग जो इसे पढ़ रहे हैं वे शायद कहें, "मेरे पास भविष्य के लिए कोई आशा नहीं" या "मुझे नहीं लगता कि मैं ज्यादा आगे बढ़ पाऊँगा। मेरे जीवन में ज्यादा कुछ नहीं होने वाला।" मैं चाहता हूँ आप इस बात को जानें कि परमेश्वर और उसके वचन के कारण, हम भविष्य के लिए आशा रख सकते हैं। उसका वचन कहता है,

1 कुरिन्थियों 2:9

परन्तु जैसा लिखा है,

"जो बातें आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं,
और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं,
वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।"

हमारे पास भविष्य के लिए आशा है। हमें आशा है कि हम भविष्य में कुछ अद्भुत बातों को देखेंगे। क्यों? परमेश्वर के वचन के कारण जो कहता है कि परमेश्वर ने ऐसी बातों को उनके लिए तैयार किया है जो उससे प्रेम करते हैं।

यिर्मयाह 29:11

क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा।

वचन—हमारी आशा का आधार है। अतः हम अच्छे भविष्य की आशा रख सकते हैं। हमारी वर्तमान परिस्थिति हमारे अंतिम गंतव्य की दर्शक नहीं है। हमें आशा है कि हमारा भविष्य उन प्रतिज्ञाओं के कारण दृढ़, सफल और सुरक्षित है, जो उसने अपने वचन में की है। हम अपनी वर्तमान परिस्थितियों को हमे नीचे गिराने का मौका नहीं देंगे।

सफल होने की आशा

आप में से कुछ लोगों के नकारात्मक विचार हो सकते हैं। आपने जो भी प्रयास किया होगा उसका अंत असफलता से हुआ हो,और आप विचार कर रहें होंगे कि आप कभी सफल भी होंगे या नहीं। अब तक आप सफल होने में असमर्थ रहे हों। परमेश्वर का वचन क्या कहता आपको उस पर विश्वास

करना होगा,

भजन संहिता 1:1-3

[1] क्या ही धन्य है वह पुरुष
जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता,
और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता;
और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है!
[2] परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता;
और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।
[3] वह उस वृक्ष के समान है,
जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है,
और अपनी ऋतु में फलता है,
और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं।
इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।

एक फलवंत वृक्ष के रूप में अपनी कल्पना करें। अपने आपको ऐसे व्यक्ति के रूप में देखें जो कुछ भी वह करता है उसमें समृद्धि प्राप्त करता है। परमेश्वर का यह वचन आपके जीवन के सम्बंध में है और किसी भी परिस्थितियों को उसे चुराने न दें जो कि,परमेश्वर आपके लिए कर सकता है।

आपके सपनों को पूर्ण करने की आशा

आपमें से कुछ लोगों ने अपने सपनों को कभी भी पूर्ण करने की सारी आशा छोड़ दी होगी। परमेश्वर का वचन कहता है,

भजन संहिता 37:4
यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा।

मैं ऐसी परिस्थितियों में रह चुका हूँ जब मुझे ऐसा प्रतीत होता था जैसे मैं अपने सपनों को कभी प्राप्त नहीं कर पाऊँगा। मुझे याद है, जैसे जैसे मैं बड़ा हो रहा था, मेरे हृदय में बैंगलोर शहर में एक ऐसी दृढ़ कलीसिया स्थापित करने का सपना था जो संसार के राष्ट्रों को प्रभावित करेगी। विभिन्न बातें घटित हुई और मैंने अपने आपको ऐसी परिस्थितियों के मध्य पाया जहां मैं यह सोचने लगा कि मैं अपने सपनों को कभी पूर्ण नहीं कर पाऊँगा। ऐसा लगता था कि वह मात्र एक स्वप्न रह जाएगा। ऐसा प्रतीत होता था कि मैं उसमें कभी आगे कदम नहीं रख पाऊँगा। फिर भी, मैंने अपनी आशा को जीवित रखा क्योंकि उसका वचन कहता है कि वह मुझे *"भविष्य और आशा"* देगा, और उसने ऐसी बातों को भी तैयार किया है जिन्हें, *"आँखों ने नहीं देखा, और न ही कानों ने सुना है।"* उसका वचन

यह भी कहता है कि यदि मैं उसमें आनंदित रहा तो वह मेरे हृदय की अभिलाषाओं को पूर्ण करेगा। परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी बुरी से बुरी प्रतीत हो रही हों, किन्तु उसका वचन वही बना रहा। मैंने उसके वचनों को थाम कर उस पर कायम रहा। उसका वचन मेरी आशा का आधार बन गया। और अब, मैं इसी स्वप्न को साकार हुए देख रहा हूँ। हालेलुय्याह!

आपकी संतान हेतु आशा

आपमें से कुछ लोग अपने संतानों से संबंधित आशा खो रहे होंगे। भले ही आपने उन्हें अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया होगा और उन्हें वचन से सिखाया होगा, इस समय, वे जीवन के एक ऐसे चरण में हो सकते हैं जहाँ वे उन बातों में फँसे हैं जिनके बारे में आपने कभी कल्पना नहीं की होगी कि वे इसमें शामिल होंगे। शायद उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी है, या शराब और नशीली दवाओं के आदी बन गए हैं। लगता है आपकी सारी शिक्षा व्यर्थ हो गई है। आप सोच रहे होंगे कि आपके इतने सालों का परिश्रम व्यर्थ हो गया। आप अपने बच्चों के लिए आशा छोड़ने की कगार पर हो सकते हैं। मैं आपको प्रोत्साहित कर कहना चाहता हूँ कि "आशा न छोड़ें।" परमेश्वर का वचन कहता है,

भजन संहिता 112:1,2

[1] याह की स्तुति करो! क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है!

[2] उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा; सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी।

आप प्रभु से कह सकते हैं, "मैं आपके वचन में आशा कर रहा हूँ। आपका वचन कहता है कि मेरे बच्चे इस पृथ्वी पर सामर्थी होंगे।" इसका मतलब यह है कि आपके बच्चे इस पृथ्वी पर कुछ बनेंगे। वे परमेश्वर के राज्य के लिए कुछ करेंगे। वे इस पृथ्वी पर व्यर्थ नहीं होंगे। वे परमेश्वर हेतु प्रभावशाली बनेंगे।

यशायाह 54:13

तेरे सब लड़के यहोवा के सिखलाए हुए होंगे,

और उनको बड़ी शान्ति मिलेगी।

उपर्युक्त वचन को अपनी आशा का आधार बने रहने दें। आशा रखें। हो सकता है कि आज आप जो कह रहे हैं, आपकी संतान उसे अनसुना कर रही हो। किन्तु फिर भी आप वचन में आशा के विपरीत, आशा कर सकते हैं।

स्वास्थ्य (चँगाई) की आशा

आपमें से कुछ लोग बीमारी और रोग से पीड़ित होंगे और डॉक्टरों ने आपसे कहा होगा कि कोई

आशा नहीं है। यह वचन परमेश्वर के बारे में यह कहता है।

भजन संहिता 103:3

वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है।

आपके पास यही आशा है। आपकी आशा को जीवित रखें। परमेश्वर का वचन जो कहता है उसके अनुसार कल्पना करें कि ,आप स्वस्थ और अच्छे हैं।

नीतिवचन 3:7,8

[7] अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना।

[8] ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियाँ पुष्ट रहेंगी।

परमेश्वर के लिए आपके हृदय में जो श्रद्धापूर्ण भय है वह आपके शरीर में स्वस्थता (चंगाई) हेतु उपचार लाता है।

6

निराशाजनक परिस्थिति के मध्य मैं क्या करता हूँ?

रोमियों 4:17-21

[17] जैसा लिखा है, "मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है" - उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया, और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता है कि मानो वे हैं।

[18] उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश ऐसा होगा," वह बहुत सी जातियों का पिता हो।

[19] वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ,

[20] और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की;

[21] और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है।

निराशाजनक परिस्थिति के मध्य मैं क्या करूँ जिससे परमेश्वर उसे पलट सके? हमने अब्राहम के जीवन से क्या शिक्षा ली हैं? उसने ऐसा क्या किया जिससे परमेश्वर को निराशाजनक परिस्थिति को पलटने का मौका मिला? बाइबल कहती है कि अब्राहम ने निराशा में भी आशा के विपरीत विश्वास किया कि ,जिसका वचन उसे दिया गया है वह उसके अनुसार बन सके (रोमियों 4:18)। क्या आप विश्वास करेंगे कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है वह पूरा होगा? उदाहरण के लिए, परमेश्वर का वचन कहता है, "जो कुछ वह करे वह सफल होगा" और आपको इस पर विश्वास करना आवश्यक है। क्या आप विश्वास करेंगे?

इस आशा के साथ विश्वास करें कि परमेश्वर ने जो कहा है आप उसके अनुसार बन जाएंगे

परमेश्वर और उसका वचन एक हैं। उसके वचन में विश्वास परमेश्वर में विश्वास है। आपको आशा के

विरुद्ध विश्वास करना है। अतः चाहे सब कुछ निराशाजनक प्रतीत हो, आपको यह विश्वास करना है कि जैसा बनाने का परमेश्वर ने वचन दिया है आप वैसे ही बनेंगे। आशा न छोड़ें।

परिस्थिति की निराश द्वारा अपने विश्वास को कम न होने दें

अब्राहम *"जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ,"* (रोमियों 4:19)। उसने अपने विश्वास को कमज़ोर होने की अनुमति नहीं दी क्योंकि उसने अपने शरीर की अवस्था और उसके आसपास की परिस्थितियों द्वारा अपने विश्वास कम नहीं होने दिया। किसी भी परिस्थिति की निराशा आपके विश्वास को असहाय या कमज़ोर न कर पाए। अपने आसपास देखकर यह न कहें, "यह सुधार से परे है।"

परंतु, इसका अर्थ यह नहीं कि आप अपनी परिस्थितियों को नकारें। बस आपकी परिस्थितियों की वास्तविकता आपके विश्वास को कमज़ोर न कर पाए। बल्कि, आपको अपनी कल्पना के "चित्र फलक" पर आपको दिए गए वचन अनुसार परिणाम के "रंग" भरना है और चित्र बनाना है। उदाहरण के तौर पर, अपने आपको पूर्ण रूप से स्वस्थ देखें, जीवन में अपने आपको सफल व्यक्ति के रूप में देखें, अपने विवाह को सफल और पुनर्स्थापित देखें, अपनी संतान को परमेश्वर की सेवा करता हुआ और उसके मार्गों पर चलता हुआ देखें। ऐसे चित्र में परमेश्वर के वचन के आधार पर रंग भरें और उसे हमेशा देखते रहें !

एक रात, परमेश्वर अब्राहम को उसके तम्बू से बाहर ले आया और उसने उससे कहा कि आकाश के तारों को देखे। और उसने उससे कहा, *"तेरा वंश ऐसा ही होगा"* (उत्पत्ति 15:5अ)। उसके बाद अब्राहम ने अपने मन में परमेश्वर के वचन का "चित्र" बना लिया। वह अपने वंशजों को आकाश के तारों के समान असंख्य में "देखने" में सक्षम था। जितनी बार अब्राहम अपने शरीर की अवस्था और अपने पत्नी के गर्भाशय की मृतावस्था को देखता, वह स्वयं को परमेश्वर के वचन का स्मरण करवाता कि वह उसे आकाश के तारों के समान और समुद्र तट की रेत के समान असंख्य संतान देगा।

कई बार, मैं अपने हृदय में कल्पना करता था कि मैं हज़ारों लोगों को परमेश्वर का वचन सुना रहा हूँ। मैं कल्पना करता था कि शहर के विभिन्न स्थानों में हमारी स्थानीय कलीसिया में कई हज़ार लोगों की मण्डलियाँ हैं। इस तरह, रविवार की सुबह कलीसिया में खाली कुर्सियों का दृश्य मेरे विश्वास को दुर्बल नहीं करता क्योंकि, मेरे हृदय में हमारे अंतिम गंतव्य स्थान का चित्र था। और अब, हर रविवार, मैं उस आशा को जो मेरे हृदय में थी उसे मैं वास्तविकता में देखता हूँ। आपकी वर्तमान परिस्थितियाँ चाहे जो हों, आपके गंतव्य स्थान या मंज़िल का चित्र हृदय में रखें और आशा करते रहें।

दृढ़ संकल्प और सहनशक्ति का प्रदर्शन करें

एक और बात जो हम अब्राहम के जीवन से देखते हैं वह यह है कि वह अविश्वास में नहीं लड़खड़ाया (रोमियों 4:20)। वह परमेश्वर के वचन में नहीं लड़खड़ाया। उसने दृढ़ संकल्प और सहनशक्ति का प्रदर्शन किया। आशा के साथ-साथ दृढ़ निश्चय और सहनशक्ति का होना आवश्यक है। रोमियों 8:25 कहता है, *"परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उसकी आशा रखते हैं, तो धीरज से उसकी बाट जोहते भी हैं।"* हालाँकि हममें से अधिकांश लोग भिन्न बातों की आशा करते हैं, हम उन्हें तुरंत पाना चाहते हैं। दूसरी ओर, पवित्रशास्त्र हमें उन बातों की धीरज के साथ बाँट जोहने की सलाह देता है जिन्हें हम नहीं देखते। आसानी से हार न मानें। कुछ धीरज के साथ बाँट जोहें। प्रेरित पौलुस कहता है,

1 थिस्सलुनीकियों 1:3

और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं।

आशा धैर्यवान है! सच्ची आशा जो वचन पर आधारित है धैर्यवान है।

विलापगीत 3:26

यहोवा से उद्धार पाने की आशा रखकर चुपचाप रहना भला है।

जब आपके पास सच्ची आशा होती है, तब शान्ति, निश्चयता, और आत्म-संयम का बोध होता है। आप जानते हैं कि वह आएगा। आप परेशान, विचलित,और व्याकुल होकर जो चाहते हैं उसे पाने के लिए हर एक को मार्ग से हटाना नहीं चाहते हैं। बल्कि आप शांत रहते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि जिसका आपको विश्वास हैं वह पूर्ण होगा। आप दृढ़ निश्चयी हैं, और आप धीरज के साथ इंतज़ार करते हैं। दृढ़ संकल्प परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता को प्रदर्शित करता है। सरल रास्ता न अपनाएँ। इससे बातें और उलझ सकती हैं!

अपनी प्रसन्नता बनाए रखें; परमेश्वर की स्तुति करें

अब्राहम ने परमेश्वर की महिमा की (रोमियों 4:20)। जब आपके पास आशा होती है, तब आपके पास प्रसन्नता होती है। क्योंकि वचन जो कहता है उसकी आपको आशा है, आप उल्लसित होते हैं। ऐसे समय भी होते हैं जब आप प्रसन्नता की परिस्थितियों में होते हैं।किन्तु फिर, ऐसे भी समय आते हैं जब आप आशा में प्रसन्न होते हैं। आपमें से जिनके छोटे बच्चे हैं वे जानते हैं कि जब उनका जन्मदिन आता है तब वे कितने उत्साहित होते हैं! जब हमारी बेटी रूथ छोटी थी और अपना जन्मदिन मनाती थी, तब वह एक सप्ताह पहले से ही उस दिन का इंतज़ार करती रहती थी। वह "आशा में आनंदित" होती थी! वह उत्साहित होती थी, और उसके जन्मदिन के एक रात पहले, वह कहती, "डैडी, कल सुबह जब मैं नींद से जागूँगी तो आप मुझे कहेंगे, 'गुड मॉर्निंग, बर्थ डे गर्ल।'" अगले दिन

अपना जन्मदिन मनाने की सच्चाई भी उसे "अभी से" प्रसन्न करती थी। अब तक उसका जन्मदिन नहीं आया होता, फिर भी वह उस आशा के कारण प्रसन्न होती थी जो उसके पास थी। मसीही होने के नाते, हम आशा में प्रसन्न होते हैं। हम प्रसन्न होते हैं कि परमेश्वर बातों को और परिस्थितियों को पलट देंगे। हम आशा में प्रसन्न होते हैं।

रोमियों 15:13

परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।

रोमियों 12:12

आशा में आनन्दित रहो; क्लेश में स्थिर रहो; प्रार्थना में नित्य लगे रहो।

हम आशा से परिपूर्ण हो सकते हैं और आशा का परमेश्वर हमें प्रसन्नता और शांति से भर देता है। जब हम विश्वास करते हैं तो हमारे जीवन में आनंद और शांति आती है। कभी-कभी, लोग प्रतीक्षा लंबी होने पर शिकायत करना और बड़बड़ाना शुरू कर देते हैं। उन्हें आशा के चित्र को अपने पास रखना आवश्यक है। वर्तमान परिस्थितियों मे चिड़चिड़ाने ने के बजाय आशा के चित्र को संभाल कर रखें। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि एक दिन यह चित्र वास्तविकता में होगा।

भजन संहिता 42:5

हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह; क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा।

भजन संहिता 71:14

मैं तो निरन्तर आशा लगाए रहूँगा, और तेरी स्तुति अधिकाधिक करता जाऊँगा।

जब व्यक्ति को आशा होती है तो उसे प्रसन्नता की अनुभूति होती है और उसमें परमेश्वर की स्तुति करने की क्षमता होती है। हो सकता है कि जब आप इसे पढ़ रहे हैं, तो आप एक निराशाजनक स्थिति के मध्य में हों और कह रहे हों, "मैं कैसे आनंदित रह सकता हूँ?" बाइबल कहती है, "आशा में आनंदित हों!" हम परमेश्वर की स्तुति कैसे कर सकते हैं? हम अपनी आशा के कारण परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं। आज सारी बातें बुरी लग सकती हैं। आज परिस्थितियाँ कठिन हो सकती हैं। किन्तु फिर भी आप उसकी स्तुति कर सकते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि ये बातें हमेशा के लिए नहीं रहेंगी। बाइबल का परमेश्वर वह परमेश्वर है जो निराशाजनक परिस्थितियों को पलट देता है। और वह आपके लिए यह करेगा। अपनी आशा जीवित रखें। आशा में विश्वास रखें।

एक गीत है जो हम गाते थे। इस गीत के शब्द अत्यंत प्रोत्साहित करने वाले हैं।

प्रेज़ द लॉर्ड (प्रभु की स्तुति हो)

ईलियट बी. बैनिस्टर तथा माइकल विन्सेंट हडसन द्वारा लिखित

पद 1

जब आप किसी संघर्ष में हैं
जो आपके सारे सपनों को बिखेर देता है
और आपकी आशाओं को बेरहमी से कुचल दिया गया है
शैतान की प्रकट युक्तियों से
और आप अपने भीतर उत्तेजना महसूस करते हैं
सांसारिक भय के अधीन होना
जिस विश्वास में आप खड़े हैं, उसे लुप्त न होने दें

कोरस

प्रभु की स्तुति हो
वह उन लोगों के माध्यम से कार्य कर सकता है जो उसकी स्तुति करते हैं,
प्रभु की स्तुति हो
क्योंकि हमारा परमेश्वर स्तुति में वास करता है,
प्रभु की स्तुति हो
उन जंजीरों के लिए जो आपको बांधती हुई प्रतीत होती हैं
केवल आपको यह याद दिलाने के लिए है कि वे आपके पीछे निर्बल होकर गिर पड़ी हैं
जब आप उसकी स्तुति करते हैं

पद 2

अब शैतान झूठा है
और वह हमें सोचने पर विवश करना चाहता है
कि हम निर्धन हैं
जब वह स्वयं को जानता है
हम राजा की संतान हैं
इसलिए विश्वास की सामर्थी ढाल उठाएँ
क्योंकि लड़ाई तो जीतनी ही होगी
हम जानते हैं कि यीशु मसीह जी उठा है
इसलिए काम पहले ही हो चुका है

शायद आप यह पुस्तक पढ़ रहे हैं और कह रहे हैं "मैं एक निराशाजनक स्थिति में हूँ।" शायद यह आपके विवाह , आपके घर, संतान, आपकी आर्थिक स्थिति , नौकरी, करियर या व्यवसाय की बात है—या फिर जीवन की कोई भी बात हो सकती है। हम सभी ऐसी स्थितियों का सामना करते हैं। मैं आपको प्रोत्साहन देना चाहता हूं—**आशा मत खोइए**। आशा न खोना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब आप आशा खो देते हैं, तो आपका आंतरिक मनुष्यत्व कमज़ोर हो जाता है। जब आप आशा खो देते हैं, तो आप बिना लंगर के जहाज की तरह हो जाते हैं। आपके डूबने की सम्भावना है। जब आप आशा खो देते हैं, तब विश्वास करना बहुत मुश्किल होता है क्योंकि आशा के बिना आप विश्वास नहीं रख सकते।

परमेश्वर में और उसके वचन में आशा रखें। याद करें कि परमेश्वर ने आपके जीवन के बारे में क्या कहा है। आपके घर और विवाह के बारे में परमेश्वर का क्या वचन दिया है? जो वचन तुम्हें मिले हैं, उन्हें थामे रहें। उसके वचन को अपनी आशा का कारण बनाएँ। क्योंकि परमेश्वर ने यह कहा है, आप अभी भी आशा रख सकते हैं कि आपकी परिस्थितियाँ बदल जाएंगी। अपने हृदय में एक चित्र बना लें कि वे परमेश्वर के वचन पूर्ण होने पर कैसे होंगे। इससे आपको अपनी आशाओं को जीवित रखने में सहायता मिलेगी।

परमेश्वर *"अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है,"* (इफिसियों 3:20)।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:23)।*** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है —जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" (प्रेरितों के काम 10:43)।

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:9)।

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च **यीशु से प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, आत्मा से परिपूर्ण,** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें **contact@apcwo.org**

नि:शुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses-Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत शृंखला का समाधान करती है।

किशोरों	**व्यवहार सम्बंधी विकार**
व्यक्तिगत समायोजन	**व्यक्तित्व विकार**
सम्बंधपरक चुनौतियां	**मनोवैज्ञानिक/भावनात्मक समस्याएं**
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले	**तनाव / आघात**
कार्य सम्बंधित मुद्दे	**शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
परिवार/दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक	**आत्मिक समस्याएं**
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी	**जिंदगी की सीख**

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: chrysalislife.org
फ़ोन: +91-80-25452617 या टोल-फ्री भारत के अंतर्गत 1-800-300-00998
ईमेल: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

बँक खात्याचे नाव: All Peoples Church
बँक खाते क्रमांक: 50200068829058
IFSC क्रमांक: HDFC0004367
बँक : HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* ***apcwo.org/give***

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।
धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं - सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी)में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (D.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस:** कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

हमारा जीवन, कभी-कभी, अप्रत्याशित मोड़ लेता है। हम अचानक खुद को तूफान के बीच में पा सकते हैं। हम सभी के जीवन में सदैव चुनौतियाँ और संघर्ष आते रहेंगे। कभी-कभी, हम खुद को रास्ते के अंत में भी पा सकते हैं और मुड़ने के लिए कोई जगह नहीं होगी।

आप में से कुछ लोग असहाय परिस्थिति में होंगे। इसका सम्बंध आपकी नौकरी, करियर, शिक्षा, घर, विवाह, या परिवार से हो सकता है। जीवन में कई बातें गलत हुई होंगी। आपके जीवन में कई बातें गलत हुई होंगी। परंतु मैं आपको प्रोत्साहन देना चाहता हूँ कि बाइबल का परमेश्वर मुर्दों को जीवन देने में विशेषता रखता है—उन स्थितियों और परिस्थितियों को जो मृत और निराशाजनक प्रतीत होती हैं। वह निराशाजनक परिस्थितियों को बदलने में महारत रखता है। जब वह आपके पक्ष में है, तो आप आशा रखने का कारण न रहते हुए भी आशा रख सकते हैं।

यहां तक कि जब सब कुछ निराशाजनक लगता है, तब भी आप जयवन्त हो सकते हैं। यह पुस्तक प्रोत्साहन के सरल शब्द लाती है और हमें प्रोत्साहित करती है कि हम आशा न खोएं । परमेश्वर और उसके वचन पर आशा रखें। परमेश्वर ने आपके जीवन के बारे में जो कहा है उसे याद करें। **आशा न छोड़ें!**

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org